दिनाँक :- 08-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (अनुशांगिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- पाँच

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- वैदिक सभ्यता

* ऋग्वैदिक सभ्यता (Rigvedic civilization)

इस सभ्यता के विषय में हमारा ज्ञान ऋग्वेद पर आधारित है। ऋग्वेद प्राकृतिक शक्तियों को और अपने प्रमुख व्यक्तियों को देवता मानकर उनकी स्तुतियों में कही गयी ऋचाओं अर्थात श्लोकों का संग्रह है। श्लोकों को मंत्र भी कहते हैं। इस मंत्र की रचना किसी एक ऋषि के द्वारा

या किसी एक निश्चित अवधि में नहीं हुई। इन मंत्रों की रचना विभिन्न कालों में विभिन्न ऋषियों ने की। ऋग्वेद में दस मंडलों अर्थात अध्यायों में 1028 प्रकरण अर्थात सूक्त हैं जिनमें 10580 ऋचाएँ अर्थात मंत्र हैं। यद्यपि इस ग्रंथ में प्रत्यक्षतः किसी ऐतिहासिक घटना का वर्णन नहीं है, न किसी सामाजिक या राजनीतिक स्थिति का चारण है, फिर भी इसके अध्ययन से उस समय की प्रयाप्त सामग्री का ज्ञान हमें हो जाता है। जिसके आधार पर हम ऋग्वैदिक काल की सभ्यता का एक खाका खींच सकते हैं।

साहित्यिक परिचय:- हर वेद के तीन प्रमुख भाग हैं- संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक या उपनिषद। संहिता का अर्थ है संग्रह संहिता में देवताओं की स्तुति में गायी जानेवाली ऋचाएँ होती हैं। ऋग्वेद-संहिता की विशेषता यह है कि इसमें पूजा या स्तुति के गीत ही नहीं

बाल्कि उन गीतो मे उच्च कोटि की उदात्त कल्पना वाली कविता भी है। ऐसी कविता जो अजातक की विश्व कविताओ के लिए आदर्श के रूप मे रखी जा सकती है।

ब्राह्मण ग्रंथो का अन्तिम भाग आरण्यक कहलाता है इसमें कर्म काण्ड और अनुष्ठान की चर्चा के साथ साथ दार्शनिक सिद्धान्तो की व्याख्या में भरपूर रूपको का सहारा लिया गया है ये रूपक ही बाद के सारे साहित्यिक उपमा आदि अलंकारो की और लोकप्रचलित आख्यानो की भारतीय सामग्री हो जाते है।

भौगोलिक विवरण:- इस सभ्यता का ज्ञान ऋग्वेद से सम्बद्ध संहिता, ब्राह्मण और आरण्यक पर निर्भर है। इस साहित्य के अध्ययन से हमें आने वाले आर्यो के अनार्यो से संघर्ष और फिर उनके स्वातन्त्र्याधिकार के आपसी संघर्ष का पता चलता है।

सच तो यह कि जब ऋग्वेद की रचना हो रही थी तब आर्यों का मुख्य काम युद्ध ही युद्ध था। भारत में सर्वप्रथम आर्य सप्तसिंधु या सात नदियों के प्रदेश में आये और यहीं पर ऋग्वेद की रचना हुई। यह सप्तसिंधु का प्रदेश आज के अफगानिस्तान से पाकिस्तान के पंजाब-बिलोचिस्तान होते हुए भारत के हरियाणा प्रदेश तक था। ऋग्वेद में जिस भौगोलिक सामग्री की चर्चा है, वह इसी क्षेत्र की है। उसमें जिन नदियों की बार-बार चर्चा आती है वे इसी क्षेत्र की हैं जैसे कुभु (काबुल) सुवास्तु (स्वात) कुरु (कुर्रम) और गोमती (गोमल) जो अफगानिस्तान की नदियाँ हैं, वितस्ता (झेलम) असिक्नी (चिनाब) परुष्णी (रावी) विपाशा (व्यास) और शतद्रु (सतलज) जो पंजाब की नदियाँ हैं, सरस्वती जो पूरब-पश्चिम छोर

पर इस आर्य-क्षेत्र की हरियाणा की नदी है और सिंधु जो कश्मीर से निकलकर बिलोचिस्तान छूती हुई उत्तरी छोर की नदी है। इस क्षेत्र में पंजाब की पाँचो नदियाँ, उत्तरी छोर की सिंधु नदी और दक्षिण-छोर की सरस्वती - ये सातो नदियाँ आती है, इस लिए इस क्षेत्र को सप्तसिंधु कहा जाता है और यह क्षेत्र (पाकिस्तान बनने के पूर्व) भारत में आता था। बाकी चार नदियाँ अफगानिस्तान की है जहाँ से होकर ऋग्वैदिक आर्य इस सप्त सिंधु के क्षेत्र में आते थे सप्त सिंधु के क्षेत्र में आने के बाद ही उनका भारत के आदिम निवासी अनार्यों से और उसके बाद स्वत्वाधिकार के लिए खुद अपने ही लोगो से संघर्ष हुआ था इस संघर्ष का प्रमाण भी ऋग्वेद में मिलता है।

अनार्यों से आर्यो की घृणा: ऋग्वेद में अनार्यों

की शारीरिक बनावट और रंग-रूप की काफी चर्चा स्पष्ट चर्चा है। आर्यों को गोरा, लम्बा ऊँची नाक वाला और सरूप कहा गया है, जबकि अनार्यों को काला, नाटा, चिपटी नाक वाला छोटे सिर का। आर्य जब कि चन्द्र, सूर्य, अग्नि, उषा, चन्द्र, इंद्र, वरुण आदि देवी देवताओं को पूजते थे और मूर्तिपूजा से दूर रहते थे तो अनार्य लिंगपूजक (शिश्नदेवा), देवता विहीन (अदेवयुः) यज्ञ न करनेवाला (अयज्वन्) देवताओं को अपवित्र करनेवाले (देवपीयु) थे। अनार्यों का मजाक उड़ाते हुए आर्यों ने उसका नाम बेनाक के (अनास) न समझ में आनेवाली बोलीवाले (मृधावाक्) और अन्त में दस्यु और दास तक रखा और उन्हें गुलाम तक बनाया।

राजनीतिक संगठन (Political organization)

ऋग्वैदिक काल में राजनीतिक संगठन का आधार कुल

का नेता कुलप कहलाता था। इससे बड़ी इकाई कुलों से बना गोत्र था। गोत्र से बड़ा जन, जन से विश और विश से विकसित शब्द था। विश का स्वामी विशपति कहलाता था। गाँव का मुखिया ग्रामीण कहलाता था। आर्य विभिन्न जनों में विभक्त थे। प्रत्येक जन का नेता होता था। जन के नेता के लिए ऋग्वेद में राजन शब्द का प्रयोग हुआ है। राजा का पद वंशानुगत था, पर राजाओं का जनता द्वारा निर्वाचित भी होता था। सिंहासनारूढ़ होने पर राजा प्रजा की भलाई और रक्षा की शपथ लेता था। गोधन की रक्षा करता था। इसलिए प्रजा उसे कर देती थी। प्रजा अपनी उपज का कुछ भाग और कुछ पशु राजा को कर के रूप में देती थी। यदि राजा राज्याभिषेक के समय की गयी प्रतिज्ञाओं को पूरा नहीं करता था तो प्रजा को अधिकार था कि वह कर देना बन्द कर दे।

Scanned with CamScanner